Journal of Social Issues and Development (JSID)
(Himalayan Ecological Research Institute for Training and Grassroots Enhancement (HERITAGE)
ISSN: 2583-6994 (Vol. 3, Issue 2, May-August, 2025. pp. 158-168)

बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा एवं सामाजिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन

[1]तरुण कुमार
[2]रोहित कुमार काण्डपाल
[3]डॉ0 नीरज तिवारी
[4]प्रो0 रुचि हरीश आर्य

शोध सार

वर्तमान शोध पत्र कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल से संबद्ध बी0एड0 कॉलेज में अध्ययनरत बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा एवं सामाजिक बुद्धिमत्ता के अध्ययन पर आधारित है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बैचलर ऑफ एजुकेशन (बी0एड0) प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता के बीच अंतर्संबंधों का पता लगाना है। आत्म–अवधारणा, जिसे किसी व्यक्ति की अपनी क्षमताओं, पहचान और मूल्यों की धारणा के रूप में परिभाषित किया जाता है, व्यक्ति के व्यवहार और दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। दूसरी ओर, सामाजिक बुद्धिमत्ता से तात्पर्य पारस्परिक संबंधों को प्रभावी ढंग से समझने और प्रबंधित करने की क्षमता से है।

[1] शोधार्थी, एम.बी.जी.पी.जी.कॉलेज, हल्द्वानी (नैनीताल)।
[2] शोधार्थी, एम.बी.जी.पी.जी.कॉलेज, हल्द्वानी (नैनीताल)।
[3] सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), एम.बी.जी.पी.जी. कॉलेज, हल्द्वानी (नैनीताल)।
[4] विभागाध्यक्ष (शिक्षा शास्त्र विभाग), राजकीय महाविद्यालय हल्द्वानी शहर (नैनीताल)।

शिक्षकों के लिए, आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता दोनों महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये विशेषताऐं उनकी शिक्षण प्रभावशीलता, कक्षा प्रबंधन कौशल और सकारात्मक छात्र–शिक्षक संबंधों को बढ़ावा देने की क्षमता को प्रभावित करती हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल से संबद्ध चार महाविद्यालयों को शोध अध्ययन के रूप में लिया गया है, जिसमें दो सरकारी और दो गैर–सरकारी (निजी) कॉलेजों का चयन किया गया है। इन कॉलेजों में बी0एड0 प्रथम वर्ष और बी0एड0 द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत कुल प्रशिक्षणार्थियों में से 100 प्रशिक्षणार्थियों (सरकारी कॉलेज से 50 और गैर–सरकारी (निजी) कॉलेज से 50) को नमूना के रूप में चुना गया है। जिसमें प्रशिक्षणार्थी विज्ञान एवं कला संकाय से हैं तथा वे ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में निवास करते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण एवं विश्लेषण विधि द्वारा आंकड़े प्राप्त कर बी0एड0 प्रशिक्षणार्थिओं की आत्म–अवधारणा एवं उनकी सामाजिक बुद्धिमत्ता के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द– बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी, आत्म–अवधारणा, सामाजिक बुद्धिमत्ता, सरकारी एवं गैर–सरकारी (निजी) महाविद्यालय।

परिचय

''शिक्षा'' देश के विकास की नींव होती है, शिक्षा व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक एवं भावनात्मक क्षमताओं के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करती है। शिक्षकों की भूमिका इस संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे न केवल ज्ञान का प्रसार करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के जीवन में मूल्यों, परंपराओं एवं आदर्शों की स्थापना भी करते हैं। एक सुयोग्य शिक्षक का निर्माण एक व्यवस्थित एवं प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से ही संभव है। बी.एड. (बैचलर ऑफ एजुकेशन) प्रशिक्षण एक ऐसा कार्यक्रम है, जो समर्पित भाव से शिक्षकों को तैयार करने का प्रयास करता है। बी.एड. प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं के व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों का विकास बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस संदर्भ में, आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता दो ऐसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक कारक हैं, जो शिक्षकों की शिक्षण प्रक्रिया की गुणवत्ता और छात्रों के प्रति उनके दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं।

आत्म–अवधारणा (मुख्य घटक– आत्म–छवि, आत्म–सम्मान, आदर्श आत्म, आत्म–प्रभावकारिता और सामाजिक पहचान) व्यक्ति की स्वयं के बारे में धारणा, विचार और मूल्यांकन का परिणाम है, जो उसके आत्मविश्वास, प्रेरणा और निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करता है। जबकि, सामाजिक बुद्धिमत्ता (मुख्य घटक– सहानुभूति, सामाजिक जागरूकता, सामाजिक कौशल और अनुकूलनशीलता) व्यक्ति की सामाजिक परिप्रेक्ष्य को समझने, प्रभावी

ढंग से संवाद करने और सामाजिक संबंधों को बनाए रखने की क्षमता को दर्शाती है। शिक्षण के क्षेत्र में, एक प्रशिक्षु के लिए आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता का होना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन गुणों के साथ प्रशिक्षु कक्षा के माहौल को नियंत्रित कर सकता है, छात्रों की जरूरतों को समझ सकता है और उन्हें बेहतर शैक्षिक अनुभव प्रदान कर सकता है।

शिक्षक की सकारात्मक आत्म–अवधारणा न केवल उसे खुद के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है, बल्कि उसे छात्रों की समस्याओं को समझने और उनके समाधान की दिशा में सार्थक कदम उठाने के लिए भी प्रेरित करती है। दूसरी ओर, सामाजिक बुद्धिमत्ता के माध्यम से शिक्षक छात्रों, अभिभावकों और सहकर्मियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकता है, जो शैक्षिक प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाता है।

एक मजबूत, सकारात्मक आत्म–अवधारणा वाला शिक्षक उच्च स्तर का आत्म–आश्वासन और लचीलापन प्रदर्शित करने की संभावना रखता है, जो बेहतर कक्षा प्रबंधन और अधिक आकर्षक शिक्षण शैली में योगदान देता है। इसी तरह, सामाजिक बुद्धिमत्ता शिक्षकों को अपने छात्रों की विभिन्न भावनात्मक और सामाजिक जरूरतों को समझने और उनका जवाब देने में मदद करती है, जिससे समग्र शैक्षिक अनुभव में वृद्धि होती है।

इस अध्ययन का उद्देश्य बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता का विश्लेषण कर यह ज्ञात करना है कि ये दोनों गुण बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के प्रशिक्षण और भविष्य के शिक्षण को कितना प्रभावित कर सकते हैं। यह शोध यह पता लगाएगा कि कैसे एक बी.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम इन गुणों को विकसित करने में मदद कर सकता है और इस तरह प्रशिक्षुओं की शिक्षण क्षमताओं को बढ़ा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व

शोध विषय, "बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन", भविष्य के शिक्षकों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस शोध की आवश्यकता कई कारकों से उत्पन्न होती है, जिन्हें निम्नानुसार रेखांकित किया गया है–

- शिक्षक प्रभावशीलता को बढ़ाना।
- छात्र परिणामों पर सकारात्मक प्रभाव।
- व्यक्तिगत और व्यावसायिक क्षमता का विकास करना।
- भावनात्मक कल्याण को बढ़ाना।
- समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देना।

- पाठ्यक्रम निर्माण एवं शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों का मार्गदर्शन करना।
- वर्तमान शैक्षिक चुनौतियों का समाधान करना।

इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं जो भविष्य के शिक्षकों के मनोवैज्ञानिक कल्याण और सामाजिक क्षमता का समर्थन करते हैं। सकारात्मक आत्म–अवधारणा को बढ़ावा देने और सामाजिक बुद्धिमत्ता को बढ़ाने के माध्यम से, बी.एड. कार्यक्रम आत्मविश्वासी, सहानुभूतिपूर्ण और सामाजिक रूप से कुशल शिक्षकों के विकास में योगदान दे सकते हैं जो शिक्षण पेशे की विविध मांगों को पूरा करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं।

अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि बी.एड. पाठ्यक्रम में आत्म–जागरूकता और पारस्परिक कौशल पर केंद्रित विशिष्ट मॉड्यूल और गतिविधियों को एकीकृत करने की सिफारिश की गई है। इससे न केवल प्रशिक्षुओं की व्यक्तिगत और सामाजिक दक्षताओं को मजबूती मिलेगी बल्कि वे अधिक प्रभावी शिक्षक बनने के लिए भी तैयार होंगे।

शोध परिणामों के द्वारा शिक्षकों के शिक्षण–प्रदर्शन और छात्र परिणामों में दीर्घकालिक परिवर्तन किए जा सकते हैं। यह अध्ययन अध्यापक–शिक्षा और व्यावसायिक विकास में मनोवैज्ञानिक संरचनाओं की भूमिका पर आगे के शोध के लिए आधार प्रदान कर सकता है। यह अध्ययन न केवल शोधकर्ताओं और शिक्षकों के लिए बल्कि उन नीति निर्माताओं के लिए भी प्रासंगिक है जो अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रमों की गुणवत्ता और परिणामस्वरूप, समाज में शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में सुधार करने में निवेश करते हैं।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध समस्या ''बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता का अध्ययन'' करना है।

शोध उद्देश्य

वर्तमान शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं –

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता का उनके कॉलेज के प्रकार, संकाय, लिंग और आवासीय क्षेत्र के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

वर्तमान शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ तैयार की गई हैं –

1. बी.एड प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
2. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता में उनके कॉलेज के प्रकार, संकाय, लिंग और आवासीय क्षेत्र के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

साहित्य समीक्षा

आत्म–अवधारणा पर शोध

कुमार, पंकज और अहमद, वसीम (फरवरी 2021) शोध अध्ययन "बी.एड. सामान्य और विशेष–शिक्षा के शिक्षक–प्रशिक्षण के मध्य आत्म–अवधारणा" के परिणाम हैं कि, शिक्षक–प्रशिक्षण बी.एड. सामान्य शिक्षा में बी.एड. विशेष शिक्षा की तुलना में उच्च आत्म–अवधारणा है। परिणाम बताते हैं कि शिक्षक प्रशिक्षण नौकरी बी.एड. सामान्य और विशेष शिक्षा के बीच आत्म–अवधारणा में एक महत्वपूर्ण अंतर है।

आर. नटराज (जनवरी 2023) शोध अध्ययन "माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षुओं की आत्म–अवधारणा पर एक अध्ययन" के निष्कर्ष बताते हैं कि, अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षुओं में कथित आत्म–अवधारणा का स्तर 'औसत स्तर' पर है और अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षुओं में आदर्श आत्म–अवधारणा का स्तर 'औसत से नीचे' स्तर पर है। और इसके अलावा, लगभग 3/4 शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक आत्म–अवधारणा 'औसत स्तर' पर थी। कथित, आदर्श और सामाजिक आत्म अवधारणा के स्तरों की तुलना करने पर यह स्पष्ट है कि एक ओर कथित आत्म अवधारणा और सामाजिक आत्म अवधारणा वाले व्यक्तियों की संख्या और दूसरी ओर आदर्श आत्म अवधारणा स्तर वाले व्यक्तियों की संख्या के मध्य उचित अंतर है।

अग्रवाल, सुरभि (फरवरी 2024) ने अपने शोध में "बी.एड. छात्र अध्यापकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म अवधारणा का एक अध्ययन" शीर्षक से निष्कर्ष निकाला है कि–

1. पुरुष बी.एड. छात्र अध्यापकों की आत्म अवधारणा महिला छात्र अध्यापकों की आत्म अवधारणा से काफी अधिक थी।
2. पुरुष और महिला बी.एड. छात्र–अध्यापकों की सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक और बौद्धिक आत्म अवधारणा में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं देखा गया। केवल आत्म अवधारणा के भौतिक पहलू में, पुरुष और महिला बी.एड. छात्र अध्यापकों के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है।

3. महिला छात्र–अध्यापकों ने पुरुष छात्र–अध्यापकों की तुलना में तुलनात्मक रूप से उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता दिखाई है और दूसरी ओर पुरुष छात्र–अध्यापकों ने महिला छात्र अध्यापकों की तुलना में आत्म अवधारणा में उच्च प्रदर्शन दिखाया है।

सुल्ताना, ए. और इस्लाम, एन. (फरवरी 2024) ने "भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित आत्म–अवधारणाः आदिवासी और गैर–आदिवासी छात्रों का एक अध्ययन" शोध में पाया कि –

1. आदिवासी और गैर–आदिवासी छात्रों के बीच आत्म–अवधारणा और भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अंतर है, गैर–आदिवासी छात्र आत्म–अवधारणा के उच्च स्तर दिखाते हैं।
2. आदिवासी और गैर आदिवासी किशोर लड़के एवं लड़कियों के मध्य आत्म–अवधारणा और भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अंतर हैं।
3. अंत में, परिणाम ने आत्म–अवधारणा और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य सकारात्मक सहसंबंध भी दिखाया।

पोनमोझी, डी., और गोविंदम्मल (मई 2024) ने "बी.एड. प्रशिक्षुओं की आत्म अवधारणा पर एक अध्ययन" शीर्षक से अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि– समग्र सामाजिक बुद्धिमत्ता पर महिला एवं पुरुष स्नातक प्रशिक्षुओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

सामाजिक बुद्धिमत्ता पर शोध

एम.एल., सुनील कुमार (जून 2023) ने अपने शोध "सहायता प्राप्त तथा गैर सहायता प्राप्त संस्थानों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षुओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक बुद्धिमत्ता के बीच संबंध" में निष्कर्ष निकाला कि –

1. घटकों धैर्य, सहयोग, आत्मविश्वास, सामाजिक वातावरण की पहचान, स्मृति और कुल सामाजिक बुद्धिमत्ता में, गैर–सहायता प्राप्त संस्थानों में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता अधिक थी।
2. स्मृति को छोड़कर, शेष घटकों और कुल बुद्धिमत्ता के लिए, बी.एससी. पृष्ठभूमि वाले शिक्षक प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धिमत्ता अधिक थी।
3. लिंग–वार तुलना से पता चला कि हास्य की भावना को छोड़कर महिला शिक्षक प्रशिक्षु पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं की तुलना में अधिक सामाजिक रूप से बुद्धिमान थीं।
4. सहायता प्राप्त कॉलेजों के पुरुष शिक्षक प्रशिक्षुओं के कुछ घटकों और कुल सामाजिक बुद्धिमत्ता स्कोर में सबसे कम सामाजिक बुद्धिमत्ता स्कोर थे।

कौर, आर. और मनराल, बी. (2023), "आवासीय क्षेत्र के आधार पर छात्र–शिक्षकों की

सामाजिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन" के शोध परिणामानुसार क्षेत्र के आधार पर छात्र शिक्षकों की सामाजिक बुद्धिमत्ता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों की सामाजिक बुद्धिमत्ता का स्तर औसत है और दोनों क्षेत्रों के छात्र समान रूप से सामाजिक रूप से बुद्धिमान हैं।

बोरूआ, दिव्या ज्योति, पाडू, अंगा (मार्च 2024) "भारत में माध्यमिक छात्रों की सामाजिक बुद्धिमत्ता पर एक अध्ययनः समीक्षा विश्लेषण" ने निष्कर्ष निकाला कि लड़के और लड़कियों, शहरी एवं ग्रामीण स्कूली छात्रों, सरकारी सहायता प्राप्त और गैर सरकारी स्कूल के छात्रों की सामाजिक बुद्धिमत्ता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

दास, डी., जोशी, एन. और मखीजा, एस. (जनवरी–मार्च 2024) "युवाओं में सामाजिक बुद्धिमत्ता और सोशल मीडिया के उपयोग के बीच संबंध'' इसके अतिरिक्त, इसने युवाओं में सामाजिक बुद्धिमत्ता और सोशल मीडिया के उपयोग के बीच कोई महत्वपूर्ण नकारात्मक संबंध स्थापित नहीं किया, जो इस संबंध की जटिल प्रकृति और आगे के शोध की आवश्यकता का सुझाव देता है।

कौर, जे. और जाखड़, जी. (अप्रैल–जून 2024) "अभिभावक–बाल संबंध और सामाजिक बुद्धिमत्ता" शीर्षक वाले शोध में पाया गया कि –

1. बच्चे–माता–पिता के रिश्ते की गुणवत्ता और बच्चे की सामाजिक बुद्धिमत्ता के बीच एक सकारात्मक संबंध होगा।
2. संचार, भावनात्मक जुड़ाव, निर्भरता और संघर्ष जैसे अन्य कारक भी मुख्य रूप से बच्चे की सामाजिक बुद्धिमत्ता में भिन्नता की भविष्यवाणी करते हैं।

जनसंख्या

वर्तमान शोध में कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल से सम्बद्ध हल्द्वानी क्षेत्र के दो सरकारी एवं दो गैर सरकारी बी.एड महाविद्यालय लिये गये हैं, जिनमें बी.एड प्रशिक्षुओं की कुल जनसंख्या 400 है।

प्रतिदर्श

वर्तमान शोध में उपरोक्त जनसंख्या में से 100 बी.एड प्रशिक्षुओं का चयन नमूने के रूप में किया गया है, जिसमें 50 सरकारी तथा 50 गैर–सरकारी महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थी हैं, जो बी.एड के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत हैं।

शोध पद्धति

शोध के लिए सर्वेक्षण पद्धति एवं विश्लेषण–विधि प्रयोग में लाई गयी है।

शोध सांख्यिकी

आंकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य, मानक–विचलन और टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

वर्तमान अध्ययन में नमूने से आंकड़े प्राप्त करने के लिए डॉ0 के0 पी0 निंबालकर द्वारा तैयार की गई स्व–अवधारणा मापनी (एससीएस) एवं डॉ0 एन0 के0 चड्ढा एवं उषा गणेशन द्वारा तैयार की गई सामाजिक बुद्धिमत्ता मापनी (एसआईएस) का प्रयोग किया गया है।

सीमाऐं

1. प्रस्तुत शोध कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल से सम्बद्ध हल्द्वानी क्षेत्र के महाविद्यालयों तक सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध में केवल दो सरकारी एवं दो गैर सरकारी महाविद्यालयों का चयन किया गया।
3. शोध प्रतिदर्श के रूप में केवल 100 बी.एड. प्रशिक्षार्थियों को लिया गया है, जिसमें 50 सरकारी और 50 गैर–सरकारी (निजी) महाविद्यालयों के प्रशिक्षार्थी हैं।
4. शोध को आत्म–अवधारणा एवं सामाजिक बुद्धिमत्ता चरों तक सीमित रखा गया है।

परिणाम

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अंतर है। (शून्य परिकल्पना अस्वीकृत)
2. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता में उनके कॉलेज के प्रकार (सरकारी और गैर सरकारी), संकाय (विज्ञान और कला), लिंग (पुरुष और महिला) और आवासीय क्षेत्र (ग्रामीण और शहरी) के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। (शून्य परिकल्पना स्वीकृत)

निष्कर्ष और व्याख्या

निष्कर्ष में, यह कहा जा सकता है कि –

1. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण रूप से अंतर है। बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा का स्तर उनकी सामाजिक बुद्धिमत्ता के स्तर की अपेक्षा उच्च या अधिक है।

आंकड़ों का विश्लेषण

स्व–अवधारणा मापनी (एससीएस) और सामाजिक बुद्धिमत्ता मापनी (एसआईएस)

तालिका संख्या : 1

चर	प्रतिदर्श प्रकार	कुल प्रतिदर्श (N)	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	टी–मान	सार्थकता का स्तर (0.05 और 0.01)
एससीएस	सभी प्रशिक्षणार्थी	100	162.89	18.21	22.444	**दोनों स्तरों पर सार्थक**
एसआईएस	सभी प्रशिक्षणार्थी	100	113.4	12.44		
एससीएस	सरकारी प्रशिक्षणार्थी	50	159.70	17.84	1.771	**दोनों स्तरों पर असार्थक**
	गैर सरकारी प्रशिक्षणार्थी	50	166.08	18.19		
एसआईएस	सरकारी प्रशिक्षणार्थी	50	114.38	11.34	0.783	**असार्थक**
	गैर सरकारी प्रशिक्षणार्थी	50	112.42	13.61		
एससीएस	विज्ञान प्रशिक्षणार्थी	40	161.28	15.36	0.522	**असार्थक**
	कला प्रशिक्षणार्थी	60	163.07	18.79		
एसआईएस	विज्ञान प्रशिक्षणार्थी	40	113.80	11.22	0.038	**असार्थक**
	कला प्रशिक्षणार्थी	60	113.88	9.89		
एससीएस	छात्र प्रशिक्षणार्थी	35	161.06	15.37	0.792	**असार्थक**
	छात्रा प्रशिक्षणार्थी	65	163.88	19.61		
एसआईएस	छात्र प्रशिक्षणार्थी	35	112.37	11.54	0.624	**असार्थक**
	छात्रा प्रशिक्षणार्थी	65	113.95	13.04		
एससीएस	ग्रामीण प्रशिक्षणार्थी	38	163.92	15.81	0.465	**असार्थक**
	शहरी प्रशिक्षणार्थी	62	162.26	19.63		
एसआईएस	ग्रामीण प्रशिक्षणार्थी	38	114.26	9.95	0.582	**असार्थक**
	शहरी प्रशिक्षणार्थी	62	112.87	13.88		

2. बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता में उनके कॉलेज के प्रकार (सरकारी और गैर सरकारी), संकाय (विज्ञान और कला), लिंग (पुरुष और महिला) और आवासीय क्षेत्र (ग्रामीण और शहरी) के आधार पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। अर्थात, दोनों चर आत्म–अवधारणा और सामाजिक बुद्धिमत्ता का स्तर प्रकृति में समान है यानी न अधिक और न ही कम दोनों तटस्थ हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता, एस0 पी0 और गुप्ता, अल्का (2017). उच्चतर शैक्षिक मनोविज्ञान सिद्धांत और अभ्यास, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
2. गुप्ता, एस0 पी0 (2017). शोध परिचय, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
3. मंगल, एस0 के0 (2011). शैक्षिक मनोविज्ञान, नई दिल्ली : पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
4. अग्रवाल, सुरभि (फरवरी 2024). बी.एड. छात्र अध्यापकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म–अवधारणा का एक अध्ययन, जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च (JETIR), फरवरी 2024, खंड 11, अंक 2 (आईएसएसएन–2349–5162), (www.jetir.org)
5. आर. नटराज (जनवरी 2023). माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षुओं की आत्म–अवधारणा पर एक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), खंड 11, अंक 1 जनवरी 2023, ISSN: 2320-2882] (www.ijcrt.org)
6. एम.एल., सुनील कुमार (जून 2023). सहायता प्राप्त और गैर–सहायता प्राप्त संस्थानों में अध्ययनरत बी.एड. प्रशिक्षुओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक बुद्धिमत्ता के बीच संबंध, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), जून 2023, खंड 11 (6), आईएसएसएनः 2320–2882, (www.ijcrt.org)
7. कुमार, पंकज और अहमद, वसीम (फरवरी 2021). "बी.एड. सामान्य और विशेष–शिक्षा के शिक्षक–प्रशिक्षण के मध्य आत्म–अवधारणा का अध्ययन, इंडियन जर्नल ऑफ पॉजिटिव साइकोलॉजी फरवरी 2021, 12(1), पृष्ठ 96 से 98, IISN: p. 2229-4937] e-2321-368X
8. कौर, आर. और मनरल, बी. (2023). आवासीय क्षेत्र के आधार पर छात्र शिक्षकों की सामाजिक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, अक्टूबर–दिसंबर, 2023, खंड 11 (4), (आईएसएसएन–2769–2776), डीआईपीः 18.01.260.20231104, डीओआईः 10.25215 / 1104.260, (https://www.ijip.in)
9. कौर, जे. और जाखड़, जी. (2024). अभिभावक–बाल संबंध और सामाजिक बुद्धिमत्ता, भारतीय मनोविज्ञान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, अप्रैल–जून, 2024, खंड 12(2), आईएसएसएन 2348–5396 (ऑनलाइन) आईएसएसएनः 2349–3429 (प्रिंट)। डीआईपी:18.01.247.20241202, डीओआईः 10.25215 / 1202.247
10. दास, डी., जोशी, एन. और मखीजा, एस. (जनवरी–मार्च 2024). युवाओं में सामाजिक बुद्धिमत्ता और सोशल मीडिया के उपयोग के बीच संबंध, द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, जनवरी–मार्च, 2024, आईएसएसएन 2348–5396 (ऑनलाइन) द्य आईएसएसएनः 2349–3429 (प्रिंट), वॉल्यूम 12(1), डीआईपीः 18.01.058.20241201, डीओआईः 10.25215 / 1201.058 (https://www.ijip.in)
11. पोनमोझी, डी., और गोविंदम्मल (मई 2024). बी.एड. प्रशिक्षुओं की आत्म अवधारणा पर एक अध्ययन, जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च (JETIR), मई 2024, खंड 11, अंक 5 (आईएसएसएन–2349–5162), (www.jetir.org)
12. बोरुआ, दिव्य ज्योति, पाडु, अंगा (मार्च 2024). भारत में माध्यमिक छात्रों की सामाजिक बुद्धिमत्ता पर

एक अध्ययनः समीक्षा विश्लेषण, कला, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में बहुविषयक अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, मार्च 2024, खंड 2(3), आईएसएसएनः 2584–0231 (ऑनलाइन) https://ijmrast.com DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i3.43

13. सुल्ताना, ए. और इस्लाम, एन. (फरवरी 2024). भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित आत्म–अवधारणाः आदिवासी और गैर–आदिवासी छात्रों का एक अध्ययन, आईएसएसएनः 2042–8308, (https://www.emerald.com/insight/content/doi/10.1108/MHSI-11-20230120/full/html?skipTracking=true)